४५: समाज में पूर्णता -३

दिनांक -२६/१२/२०११

समाज में पूर्णता का तीसरा मुद्दा अभय है | अभय की अपेक्षा सर्वमानव में विद्यमान है | इस वर्तमान में भय को मानव में निहित अमानवीयता के रूप में प्रभावशील अथवा विकार माना गया है | जीव भय न के बराबर हो गया है | व्यापार और नौकरी का भय सदा से बना हुआ है | इस आधार पर अभयता कैसे हो? इसके लिये विकल्प ही एकमात्र उपाय समझ में आया है | इसका स्पष्ट स्वरूप मानव में निहित अमानवीयता से मुक्ति पाना है | यही प्रधान मुद्दा है | प्राकृतिक भय मानव कृत्यों से उत्पन्न होता है | मानव जब प्रकृति के साथ न्याय नहीं करता है अथवा उदासीन रहता है अथवा समर्थ नहीं रहता है तब इन तीनों विधियों से प्राकृतिक भय होता है | जीव भय जब तक है, तब तक जीवों के साथ संघर्ष करना शेष रहता ही है | अभी जीवों के साथ संघर्ष करना कम हो गया है अथवा न के बराबर हो गया है |

जीव भय से मुक्ति पाने के अधिकारों से भी शासन विधि से भय है | जैसा शेर मत मारो, बिल्ली मत मारो आदि आदि | इस क्रम में प्राकृतिक भय, जीव भय गौण होते हुए मानव में निहित अमानवीयता का भय होना पाया गया है | इस क्रम में मानव का उद्धार कहाँ तक होगा | मानव ही मानव का भय होने के कारण का मूल वस्तु जाँचा गया, वह है मानव का जीव चेतना में जीना | दूसरा भाषा में व्यक्तिवाद, समुदायवाद में जीना | दोनों स्थितियां जीव चेतना में होता है | जीवों में पेट भरने की अपेक्षा व्यक्तिवाद के रूप में, भयभीत होने पर समुदायवाद के रूप में व्यक्त होता है | इससे पता चलता है कि मानव समुदायवाद में जी रहा है | इस क्रम में सर्वमानव कृत, कारित, अनुमोदित विधि से अथवा मौन रहने के रूप में अपराधिक कृत्यों में फंस चुका है | इन सब बातों को देखने पर मानव ही सम्पूर्ण अपराधों का आधार है |

सूत्र व्याख्या रूप में, अपराध सूत्र स्वार्थ-परार्थ रूप में गण्य होता है | इस विधि से सर्मानव अपराधी होने अथवा कुछ लोग अछूता रहने की बात समझ में आती है | अछूता रहने पर भी प्रकारांतर विधि से फंसा ही रहता है क्योंकि ज्ञानी, विज्ञानी, अज्ञानी तीनों को समृद्धि चाहिए | भ्रमित परम्परा में भ्रमित शिक्षा, व्यवस्था, आचरण, व संविधान प्रचलित रहा ही है | अभी तक समुदायवादी संविधान बना हुआ है | राजयुग से ही व्यक्तिवाद रहा है | अभी समुदायवाद के आधार पर संविधान को मानव जात अपनाया है | चाहे जीव चेतना विधि से पारंगत हो या अपारंगत हो, दोनों सुविधा, संग्रह चाहते ही हैं | इस विधि से सर्व मानव अपराधी होना अथवा अपराध के पक्ष में होना समझ में आता है | कुल मिलाकर निर्दोष आदमी का पहचान का विधि विकल्प विधि से होना समझ में आता है | यही सर्वमानव में अपराध मुक्त आचरण के रूप में पहचान में आता है | यह समाधान, समृद्धि, अभय, सहअस्तित्व सहज प्रमाण है |

यह समझदारी से समाधान तथा श्रम से समृद्धि सहित प्रमाणित होता है | इसे जीकर देखा गया है | इसमें मुख्य कार्य समझदारी के बिना श्रम करने का प्रवृत्ति होता ही नहीं | इसके प्रमाण में आज बिना श्रम के सब कुछ पाने की इच्छा को देखा गया है | इसके मूल में धन के स्वरूप में नोट, नोट के मूल में कागज, कागज के मूल में छापाखाना है | हर देश अपना अपना छापाखाना रखा है | इसके साथ इसका मूल धन को कीमती धातुओं के रूप में पहचाना गया है | जो देश व्यापार कुशल होता

है उनके पास ऐसा धन बहुत होता है | इसलिये मानव व्यापर के चंगुल में फंसा हुआ है | इससे मुक्ति पाना ही समाधान, समृद्धि, अभय, सह-अस्तित्व पूर्वक जीने की विधि है | अभयता ही वर्तमान में जीने का विश्वास का आधार है | यह मानव संस्कृति का देन है | मानव संस्कृति ही उत्सव रूप है |

सर्वशुभ हो! जय हो ! मंगल हो! कल्याण हो!

- ए. नागराज | प्रणेता एवं लेखक - मध्यस्थ दर्शन (सह-अस्तित्ववाद) | भजनाश्रम, अमरकंटक, जिला-अनूपपुर (म. प्र.)